Code No: 4

बचपन की यादों में

334

* बिखरे हुए आज को समेटने बचपन की यादें।

एक नई सुबह आ चुकी है। सूरज की किरणें जब बड़े-बड़े पेड़ों की डालियों से झाकते हुए ज़मीन पर बिछाए हुए घासों को चूमती है तब वह घास जागते है। सुबह की वह ठंडी हल्की हवा ही है जिसने प्रकृती को एक नया रूप दिया। मगर आज के मनुष्यों को यह सुन्दरता दिखता ही नही है। हमारे पास इतना समय [illegible] आस-पास के किसी भी चीज़ को महसूस [illegible] है।

मुंबई की भाग-दौड़ में शामिल हो चुके है योगेश और उसकी पत्नी मनीशा। योगेश ने इस भाग-दौड़ के साथ बहुत पैसा कमा लिया है। दोनों पती पत्नी शहर की ज़िंदगी में अपने आपको बहुत खुश नसीब समजते है। "मनीशा वैट वॉष करते समय सारे चीज़ों में धूल-मिट्टी जमा हो जाएगी।" योगेश की आज छुट्टी है। रविवार के दिन इन्होंने फैसला करलिया है की घर की

मरमत करवाई जाए।" योगेश एक काम करते हैं सारे कीमती चीजों को कपड़े से बांद देते हैं।" मनीषा के कहने से दोनो अपने चीजों को समेटने लगे। योगेश अपने कमरे में बस्तों को निकाल रहा था जब उसने वह पुराना बस्ता देखा। वह काले रंग का छोटा बक्सा।" इसमें क्या रखा है? अरे हाँ यह तो वह ही बक्सा है जो बाबा ने मुझे बचपन मे दिया था।" योगेश मन में सोचता है। वह बक्सा खोलते ही योगेश कुछ देर केलिए खामोश हो गया। अंजाने में वह खयालों में खो गया।" योगेश तुम वहाँ क्या कर रहे हो?" पत्नी की आवाज भी योगेश नही सुनता। वह अतीत में पहुँच जाता है। अपनी बचपन की यादों में पहुँच जाता है।

"योगेश यह देखो, तुम्हारी दसवी सालगिरा का छोटा सा तोफा।" माँ कहती है। उत्सुकता से देखता है वह बच्चा और देखते ही कहता है "अरे वाह! यह तो वह खिलौना है जो मैंने मेले में देखा था। माँ शुक्रिया।" "माफ करना बेटा तब मेरे पास इतने पैसे नही थे कि मैं तुम्हे यह दिला सकूँ, मगर मेरे बेटे ने कुछ चाहा और मैंने न दिलाया, ऐसा तो हो ही नही सकता।" वह लाल रंग

की खिलौने वाली कार योगेश केलिए बहुत कीमती था, क्योंकि वह उसका ~~मनप~~ मनपसंदीदा खिलौना था। बाबा के मृत्यु के बाद माँ ही थी जिसने दिन-रात काम करके, किसी के घर की नौकरानी बनके योगेश की हर माँग पूरी करी, इसलिए माँ का दिया हुआ हर चीज़ योगेश केलिए महत्वपूर्ण था।

"दिन रात उस कार ~~की~~ के साथ खेले बिना पढ़ भी लो थोड़ा।" "हाँ माँ पढ़ लूँगा।" सोते वक्त, खाना खाते वक्त, हर वक्त वह खिलौना उसके साथ था। ~~हमेशा~~ एक दिन भी ~~कार~~ गाड़ि से खेले बिना योगेश को नींद नही आती थी। "माँ यह देखो, गाड़ि का पहिय्या टूट गया है।" योगेश एक दिन रोते हुए कहता है "कोई नही बेटा मैं दूसरा खरीदकर दे दूँगी।" "नही माँ, मुझे यह ही ठीक करके दे दो। मुझे यह ही चाहिए।" योगेश कि ज़िद के कारण मां टूटे हुए पहिए को जोड़ देती है। "माँ! हम हमेशा साथ रहेंगे, आप मुझ से दूर कभी मत जाना।" योगेश तब कहता है जब माँ उसे रात का खाना अपने हाथों से खिला रही थी। तब माँ जवाब देती है "बेटा! जैसे तुम इस खिलौने को हमेशा ~~अप~~ अपने साथ रखते हो न बिल्कुल उसी तरह ~~बड़े~~ ~~होकर~~ ~~के~~ ~~कामाने~~ ~~लगो~~

मैं तुम्हारे साथ रहूगी, टूट ही क्यों न जाऊँ, पुरानी क्यों न हो जाऊँ, मगर हर कदम पर मैं तुम्हारे साथ रहूँगी।" माँ का जवाब सुनकर योगेश फिर पूछता है "माँ! मगर किसी कारण से मैं आपसे दूर हो गया तो?" "तो बस अपने आँखे बंद करना और मुझे याद करना, मैं तुम्हे अपने पास ही नजर आऊगीं।"

अचानक से योगेश वर्तमान में आता है जब वह मनीशा का आवाज सुनता है "क्या कर रहे हो तुम? यह टूटा हुआ खिलौना और अपनी माँ की तस्वीर फैंको और समान समेटो। बच्चे देखेगें तो मज़ाक उड़ायेगें यह कहकर की इतने छोटे और बेकार के खिलौने से हमारे पाप्पा खेलते थे।" मनीशा की बात पहली बार योगेश को चुभी है। शादी के बाद आज तक जो भी किया है वह मनीशा के कहने से किया है। योगेश कुछ नहीं बोलता, उस तस्वीर को देखता है और खड़ा होकर दौड़ते अपनी महंगी गाडी की चाबी लेता है और दौड़ते हुए घर से बाहर निकलता है। गाडि के अंदर बैठते हुए वक्त भी उसके हाथों में वह पुराना खिलौना था। वह तेज़ी से गाडि चलाता है। कुछ नही सोचता। मन में कहता है "मनीशा तुम्हारे लिए यह एक टूटा हुआ खिलौना है होगा मेरे लिए नही।" गाडि तेज़ी से चलाकर योगेश रोकता है, उतरकर देखता है सामने वहाँ लिखा है 'वृद्धाश्रम'।

योगेश भागते हुए, उस वृद्धाश्रम के अंदर गया और वहाँ के एक कमरे को खोलता है। वहाँ बैठी हुई थी वह ~~औरत~~ सफेद साड़ी में, झुर्रियों वाले चेहरे ~~मे~~ के आँखों में आँसू लिए वह औरत, 'माँ'। रात बहुत हो चुकी थी ~~।~~ मगर वह सोई नहीं थी। योगेश अपने माँ के ~~प~~ पैरों में जाकर गिर जाता है, टूटके रोता है, अपने गुनह की माफी माँगता है। उसके हाथों में वह खिलौना था। "अरे बेटा उठो! रोते नहीं।" "माँ आप मुझे सज़ा दीजिए मगर मेरे साथ चलिए।" "माँ अपने बच्चों को कभी सज़ा नहीं दे सकती। और तुम्हें क्या सज़ा देना तुम तो दो हफ्ते भी मेरे बिना न रह पाए। ~~ब~~ बड़ी जल्दी मुझे लेने वापिस आ गए। चलो बेटा, चलते हैं।"

बचपन की यादों में योगेश ने अपनी गलती समझ लिया था। ~~इन यादों ने उसे एक नयनई शुरूआत~~ उन यादों ने उसे अपनी गलती सुधारने का एक और मौका दिया। वापस घर आते वक्त दोनों माँ बेटे एक बार फिर ~~अ~~ योगेश के बचपन की यादों में पहुँच चुके थे ~~।~~, अपने यादों को ताज़ा करने उस खिलौने के साथ।